Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

June 2011

Dr. Anita Kr. Gupta.
J.K. College [illegible]

"Moral and Non moral actions:"

27 FRI

नैतिक निर्णय का स्वरूप ज्ञात होने के बाद नैतिक निर्णय का विषय ज्ञात होना आवश्यक हो जाता है। नैतिक निर्णय का विषय क्या है। आचरण पर बल दिया जाता है। आचरण ऐच्छिक कर्म को कहते हैं। अतः ऐच्छिक कर्म ही नैतिक निर्णय का विषय है। यह ऐच्छिक कर्म अनैच्छिक कर्म से भिन्न है। साधारणतः मनुष्य के समस्त कर्मों को दो भागों में विभाजित किया जाता है– ऐच्छिक और अनैच्छिक कर्म। ऐच्छिक कर्म वह है जो मनुष्य की अपनी इच्छा से स्वतंत्र या संकल्प से हो। हम स्वतः अपनी इच्छा से या स्वतंत्र संकल्प से उस कार्य को करते हैं, जिसे हम सोच-समझकर, साध्य-साधन का विचार कर करते हैं तथा जिसके करने

28 SAT

में कोई बाहरी दबाव या प्रलोभन काम नहीं करता है। जिसको करने के लिए मैंने स्वतंत्र होकर संकल्प किया हो, वही मेरे लिए ऐच्छिक कर्म है। ऐच्छिक कर्म को ही संकल्पित कर्म कहते हैं। अनैच्छिक कर्म के निम्न प्रकार हैं।

(i) स्वाभाविक कर्म जैसे पलकों का गिरना, साँस लेना आदि

(ii) मानसिक या शारीरिक विकारजन्य कर्म (Psycho physical disposition) जैसे- पागल व्यक्ति का गाली बकना, बीमार व्यक्ति का व्यर्थ प्रलाप आदि।

(iii) आकस्मिक कर्म (Accidental action) जैसे कहीं रास्ते में दुर्घटना हो जाना, किसी अप्रिय व्यक्ति से भेंट हो जाना आदि।

Notes

(iv) अज्ञान-जन्य कर्म जैसे बालक रस्सी

Scanned by CamScanner

April 2011	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
						1	2
	3	4	5	6	7	8	9
	10	11	12	13	14	15	16
	17	18	19	20	21	22	23
	24	25	26	27	28	29	30

व्यक्ति का कार्य आदि।

29 SUN

(V) बलपूर्वक किये गये कर्म – जैसे बन्दूक की नोंक पर या तलवार की धार पर कोई कार्य करना, किसी प्रकार प्राण-भय से कोई कार्य करना।

उपरोक्त सभी प्रकार के कर्म अनैच्छिक हैं। अतः ये सभी कर्म नैतिक निर्णय के विषय नहीं। नैतिक निर्णय के विषय केवल दो प्रकार के कर्म हैं, ऐच्छिक कर्म तथा अभ्यासजन्य कर्म। ऐच्छिक कर्मों को तो सभी नैतिक निर्णय का विषय मानते हैं परन्तु अभ्यासजन्य कर्म के संबंध में कुछ विवाद है। जब मनुष्य प्रथम बार किसी कार्य को अपने संकल्प से करता है तो वह ऐच्छिक कर्म है। इस ऐच्छिक कर्म को जब हम बारम्बार करते हैं तो वह हमारा

30 MON

अभ्यास हो जाता है। अभ्यास बन जाने के बाद कार्य स्वतः या अपने आप होने लगता है। यदि कोई कार्य स्वतः या अपने आप हो जाय तो वह अनैच्छिक हुआ ऐच्छिक कैसे? नीतिशास्त्र के विद्वानों का कहना है कि यह कार्य जन्मजात या सहज नहीं। इन कार्यों को सर्वप्रथम करने में या न करने में हम स्वतंत्र हैं। अतः इसमें हमारी इच्छाशक्ति का हाथ है। अपनी इच्छाशक्ति से उत्पन्न होने के कारण यह भी ऐच्छिक कर्म है। उदाहरण के लिए – कोई व्यक्ति शराब पीकर गाली बकने के लिए दण्ड का भागी है या नहीं? वह अवश्य दंड का पात्र है क्योंकि इस समय उसका यह कर्म अभ्यास हो गया है, परन्तु पहली बार पीते समय उसके सामने शराब

Notes पीने और न पीने का विकल्प था। उसने

June 2011	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				1	2	3	4
	5	6	7	8	9	10	11
	12	13	14	15	16	17	18
	19	20	21	22	23	24	25
	26	27	28	29	30		

31 TUE

उसने अपनी इच्छा से पीना सीख लिया। इसी प्रकार कुछ लोगों को दुराचार या व्यभिचार का व्यसन हो जाता है, परन्तु पहली बार व्यसन को पकड़ने समय इच्छा-शक्ति का हाथ है। अतः इस प्रकार के कर्म भी नैतिक निर्णय के विषय हैं। इसी आधार पर अरस्तू आदि प्रधान दार्शनिक अभ्यास-जन्य कर्म को भी ऐच्छिक मानकर नैतिक निर्णय का विषय बतलाते हैं।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि ऐच्छिक कर्म ही नैतिक निर्णय हैं, परन्तु ऐच्छिक कर्म एक जटिल प्रक्रिया है। यह किसी चाह या अभाव से उत्पन्न होता है। इस चाह या अभाव की पूर्ति के लिए हम किसी साधन का सहारा लेते हैं। इस समय हमारे सामने कई विकल्प उत्पन्न होते हैं। सभी विकल्पों पर हम विचार-विमर्श करते हैं। इस समय हमारी इच्छाओं में संघर्ष होता है।

Notes